

## न्यायालय राजस्व मण्डल मध्यप्रदेश ग्वालियर

पुनर्विलोकन प्रकरण क्रमांक

/2014 जिला-शिवपुरी

भगवती देवी मृत द्वारा वसीयतनामा के विधिक वारिसान

- 1- सुषमा पत्नी कैलाश चन्द्र
- 2- ममता पत्नी पुष्पेन्द्र अष्टाना
- 3- उपासना श्रीवास्तव पत्नी स्व. श्री योगेन्द्र श्रीवास्तव निवासीगण पीली कोठी के सामने ए.बी रोड कमलागंज शिवपुरी (म.प्र.)

..... आवेदकगण

विरुद्ध

- 1- महिला लक्ष्मीदेवी पत्नी स्व. श्री सुभाषचन्द्र
- 2- दिलीप सिंहल पुत्र स्व. श्री सुभाष सिंहल
- 3- मनीषा पत्नी स्व. श्री सुभाष चन्द्र
- 4- अनिल कुमार पुत्र स्व. बालकिशनदास द्वारा मुख्तयारआम कैलाश सिंहल पुत्र स्व. बालकिशन दास सिंहल समस्त निवासी निजी नवग्रह मंदिर के पीछे, कमलागंज, शिवपुरी (म.प्र.)
- 5- अनुविभागीय अधिकारी शिवपुरी श्री आदित्य सिंह तोमर

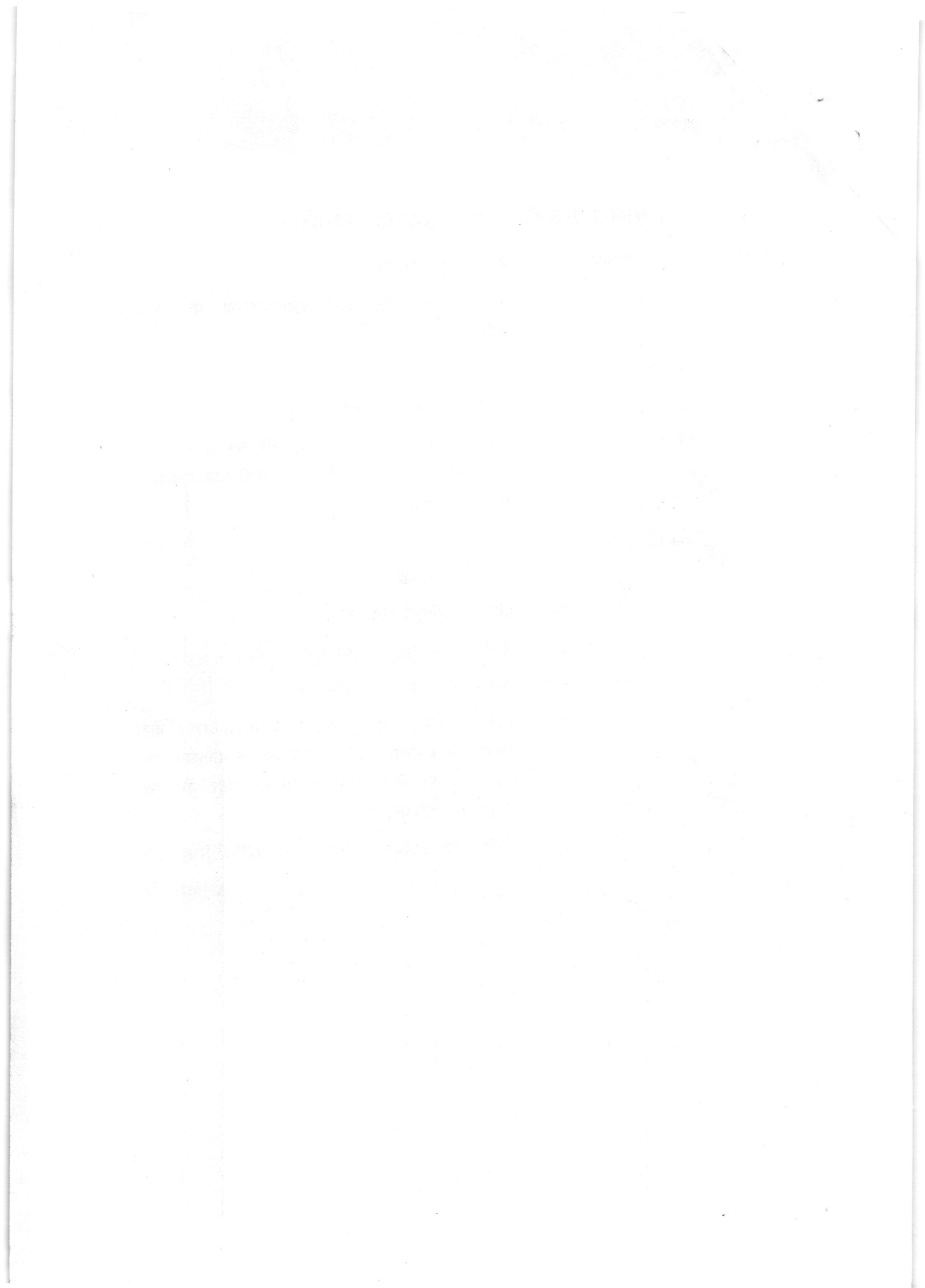
..... अनावेदकगण

R-2823-III/14

श्री सुषमा देवी की विधि  
द्वारा आज दि. 30/8/14 को  
प्रस्तुत

30/8/14  
राजस्व मण्डल म.प्र.

R. K. Khatwani  
30/8/14



राजस्व मण्डल, मध्यप्रदेश-ग्वालियर  
आवृत्ति आदेश पृष्ठ

| प्रकरण क्रमांक   | रिव्यू 2823-तीन/2014  | जिला शिवपुरी                             |
|------------------|---|--|
| स्थान तथा दिनांक | कार्यवाही तथा आदेश  | पक्षकारों एवं अभिभाषकों आदि के हस्ताक्षर |
| 5-1-2015         | <p>आवेदक अभिभाषक श्री के०के० द्विवेदी उपस्थित। अनावेदक कं 5 शासन की ओर से पैनल अभिभाषक श्री अनिल कुमार श्रीवास्तव उपस्थित। उभय पक्ष द्वारा प्रस्तुत तर्कों के संदर्भ में इस न्यायालय के मूल प्रकरण का अवलोकन किया गया। यह पुनर्विलोकन इस न्यायालय के आदेश दिनांक 23-6-2014 के विरुद्ध प्रस्तुत किया गया है। म०प्र० भू-राजस्व संहिता 1959 की धारा 51 में पुनर्विलोकन हेतु निम्नलिखित तीन आधारों का उल्लेख किया गया है-</p> <ol style="list-style-type: none"> <li>1 किसी नई और महत्वपूर्ण बात या साक्ष्य का पता चलना जो सम्यक् तत्परता के पश्चात भी उस समय जब आदेश किया गया था, उस पक्षकार के ज्ञान में नहीं थी अथवा उसके द्वारा पेश नहीं की जा सकती थी, या</li> <li>2 मामले के अभिलेख से ही प्रकट कोई भूल या गलती, या</li> <li>3 कोई अन्य पर्याप्त कारण</li> </ol> <p>पूर्वाधिकारी द्वारा दोनों पक्षों को सुनवाई का समुचित अवसर देकर अंतिम एवं विस्तृत आदेश पारित किया गया है। आवेदक के अभिभाषक द्वारा अपने तर्क में ऐसा कोई प्रमाण नहीं दिया है जिससे यह प्रकट हो कि पूर्व में किए गए निर्णय के पुनर्विलोकन हेतु आवश्यक कोई आधार हो। अतः यह पुनर्विलोकन आधारहीन होने से निरस्त किया जाता है।</p> <p style="text-align: right;">( डा० मधु खरे )<br/>सदस्य</p> |  |

